RNI MAHMAR
36829-2010

ISSN- 2229-4929

Peer Reviewed

Akshar Wangmay

International Research Journal
UGC-CARE LISTED

Issue – IV, Volume-IV

October 2021

Chief Editor
Dr. Nanasaheb Suryawanshi

AKSHAR WANGMAY

International Peer Reviewed Journal

UGC CARE LISTED JOURNAL
October – 2021
Issue-IV, Volume-IV

Chief Editor

Dr. Nanasaheb Suryawanshi

PRATIK PRAKASHAN, 'PRANAV', RUKMENAGAR, THODGA ROAD AHMEDPUR,
DIST. LATUR, -433515, MAHARASHTRA

Editorial Board

Dr. Mahendra S. Kadam
Dr. Netaji B. Kokate
Dr. Balasaheb V. Das
Mr. Zakirhusen B. Mulani

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors **Price: Rs.1000**

45	साहित्येतर क्षेत्र में अनुवाद का योगदान प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ	156-162
46	''संस्कृति और भूमंडलिकरण'' डॉ.मिर्झा अनिस बेग रज्जाक बेग	163-165
47	भाषा,साहित्य,संस्कृति और अनुवाद % अनुसंधान डॉ.हाशमबेग मिर्झा, रहिसा मिर्झा	166-170
48	तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र तथा दिशाएँ प्रा. डॉ. भगवान आदटराव	171-173
49	मराठी साहित्य और अन्य कलाओं में मराठी संस्कृति का अक्स डॉ. राजशेखर शिंदे	174-180
50	अनुवाद :अर्थ स्वरूप और समस्याएं डॉ. प्रशांत नलवडे प्रा. अमोल मोरे	181-183
51	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद संस्कृति डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले	184-187
.52	अनुवाद : अर्थ, स्वरूप एवं समस्याएं प्रा. डॉ. संगिता उप्पे	188-190
53	'धाँधलेश्वर' व्यंग्य संग्रह में चित्रित सामाजिक व्यंग्य प्रा. नितीन विठ्ठल पाटील	191-194
54	कृष्णा सोबती के उपन्यास डार से बिछुडी मे खलनायक के रूप मे पुरुष श्रीमती प्रवीन शर्मा डॉ. कृष्ण चंद रल्हाण	195-198
55	वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा प्रा. श्रीमती रावन खुदाबक्ष मुल्ला	199-201

'Akshar Wangmay' UGC Care Listed, International Research Journal ISSN: 2229-4929, October - 2021
Issue-IV, Volume-IV

वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा

प्रा. श्रीमती राबन खुदाबक्ष मुल्ला
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग सह.प्राध्यापक डी.पी.भोसले कॉलेज कोरेगाव जि.सातारा
ईमेल— hälloraban@gmail.com

राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत और राष्ट्रभाषा हमारे लिए राष्ट्र का गौरव है। स्वतंत्रता के पश्चात् संविधान ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया;पर राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का सम्मान होना भी अनिवार्य है। भारत हमारा बहुभाषी देश है,यह हमारे लिए गौरव की बात है,पर कोई एक भाषा हमारे राष्ट्र की पहचान बन सकती है और वह है हिंदी, जो राष्ट्रभाषा होने की क्षमता रखती है। जिस भाषा ने हमें गुलामी की दास्ता से मुक्त किया, जिसने कबीर, सूर, तुलसी, मीरा,जायसी, रहिम, बिहारी, पंत, प्रसाद, निराला, महादेवी वर्मा, बच्चन, प्रेमचंद,यशपाल, तथा कवि प्रदिप जैसे कई महान साहित्यकारों को जन्म दिया, जिन्होंने यथार्थ और आदर्शवादी, मूल्यप्रिष्ठित, जनसामान्य का साहित्य लिखा,जो भाषा जनसंचार माध्यम, ज्ञान—विज्ञान और तकनीकी तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर की भाषा बनने की क्षमता रखती हो, जिसके साहित्य,खेल,फिल्म,धारावाहिक, विज्ञापन और गीतों ने देश—विदेश में धूम मचाया है, जिस भाषा के माध्यम से संसार का सारा काम चलाया जा सकता है वह अद्वितीय भाषा है हिंदी।

म.गांधी जी के अनुसार 'हिंदी हमारे हृदय की भाषा है। हमारे देश की वाणी है। अँग्रेजी भाषा को अपनाना वास्तव में गुलाम बनने जैसा है' आज हमें अँग्रेजी की मानसिकता और दासता से उभरकर भारत की स्वतंत्र सांस्कृतिक, सामाजिक सत्ता की खोज की ओर उन्मुख होना चाहिए; क्योंकि भाषा का प्रश्न न केवल राजनीतिक है बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक भी है। आज हिंदी विश्व स्तर पर समृद्ध और विकसित होती जा रही है, किंतु समुचे राष्ट्र की भाषा न बन पायी है। अत: राष्ट्रीयता की भावना से प्रज्वलित होकर हमें हिंदी को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रदान करना है। हिंदी के इस महत्ता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोधनिबंध में 'वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा की स्थिति एवं गति को उजागर करते हुए उसके महत्व को शब्दांकित करने का यह एक छोटा—सा प्रयास रहा है।

हिंदी के वैश्विक संदर्भ में प्रो.सिद्धेश्वर प्रसाद लिखते हैं—'विश्वभर में करोडों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक संपर्कभाषा के रूप में हिंदी का इस्तेमाल कर रहें है। इससे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को एक नई पहचान मिली है। युनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी स्वीकृति मिली है। भारतीय विचार और संस्कृति की वाहक होने का श्रेय हिंदी को है। भाषा और साहित्य की समृद्धि तथा भाषा—भषियों की संख्या आदि सभी दृष्टियों से हिंदी संसार की विशिष्ट एवं कुछ महत्वपूर्ण भाषा में एक है।'

संसार के लगभग १२० देशों में भारतीय मूल के लोग रहते हैं। आज हिंदी किसी भी विधा में क्यों न हो उसका भूमंडलीय आकाश विस्तृत होता जा रहा है। विभिन्न चॅनेलों पर वह रिमोटीय उड़ान भरती हुई नजर आती है।

आज विश्व में हिंदी माध्यम से शिक्षा देनेवाले अनेक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय हैं। हिंदी पुस्तकें, पत्र—पत्रिकाएँ, समाचार पत्र तक यहाँ हिंदी में मिलता है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना आदि द्विपों में हिंदी की शिक्षा दी जाती है। कई विदेशी छात्र यहाँ हिंदी सीखने आते हैं। ४० प्रतिशत विदेशी विश्वविद्यालयों के लिए यह संस्थान भाषा का प्रशिक्षण देता है। ६० प्रतिशत विदेशी छात्र—छात्राएँ दाखिला लेते हैं। यहाँ हिंदी के साथ संस्कृत, उर्दू, तेलगू और पंजाबी भाषाएँ भी पढाई जाती है। इन द्विपों में बसे हुए हिंदी भाषी अपनी मातृभाषा जो पूर्वजों की भाषा रही है, उसके प्रति प्रेम और व्यवहार करते हैं। युगाना में प्रतिवर्ष हजारों छात्र हिंदी की परीक्षा में सफलता प्राप्त कर यहाँ की भाषा, वेशभूषा और संस्कृति का सम्मान करते हैं। हिंदी की सरलता, मिठास और यहाँ की माटी की खुशबू इनके जीवन में बस गई है।

वर्तमान युग भूमंडलीकरण का है। भाषा, संस्कृति, समाज, साहित्य, खेल, शिक्षा, बाजार आदि सभी क्षेत्र एक दूसरे से जुड़े हैं। रूस, फ्रांस, जर्मनी, इटली, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, हालैंड, युगोस्वालिया, हंगरी आदि युरोप के कई देशों में हिंदी में अध्ययन—अध्यापन का काम होता है। यहाँ के अनेक छात्र भारत में शिक्षा प्राप्त करते हैं। हिंदी और व्याकरण पर शोध कार्य करते हैं। हमारे देश के शिक्षक भी वहाँ जाकर शिक्षा का कार्य करते है। रूस में हिंदी का बहुत अधिक प्रभाव है। हिंदी की पढाई ताश्कंद के एक विद्यालय में दूसरी कक्षा से आरंभ हो जाती है। रूस के हिंदी भाषी विद्वानों ने रूसी हिंदी और रूसी हिंदी शब्दकोश, व्याकरण आदि किताबें लिखी है। रूस के विद्वान पी.ए. बरान्निकोव ने'रामचरितमानस' का रूसी भाषा में सुंदर अनुवाद किया है। युरोत्वैस्तकोव, एन. साजोनोव, चेतरना,ए.ए.

वरान्निकोव चतीशेव, चेलेशेव आदि रूसी विद्वान हिंदी भाषा और साहित्य के विविध पक्षों पर शोध कार्य किया है। पंत, प्रसाद, निराला, यशपाल, प्रेमचंद, जैनेंद्र और दिनकर के साहित्य से प्रभावित होकर उनकी रचनाओं का रूसी में अनुवाद किया है। इंगलैंड के पिंकाट ने १९वीं सदी में हिंदी में अनेक पुस्तकें लिखी है। कैम्ब्रिज के एफ.ए.आलोचन ने 'विनयपत्रिका' और 'कवितावली' पर शोध कार्य किया। फ्रांस, इटली में भी हिंदी के साहित्य का अनुवाद फ्रेंच और इतालवी भाषा में किया गया है। इसप्रकार हिंदी की लोकप्रियता यूरोप में देखी जा सकती है।

अमेरिका और मेक्सिको में हिंदी के अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है। इनके कई विश्वविद्यालयों में हिंदी के शोध केंद्र खुले है। यहाँ अनेक भारतीय हिंदी अध्यापन का कार्य कर रहें है। एशिया में जापान, उत्तर–दक्षिण कोरिया, श्रीलंका, नेपाल, सिंगापुर आदि देशों में हिंदी पढ़ाई जाती है। जापान में हिंदी बोलनेवाले अधिक है। प्रेमचंद के 'गोदान' का अनुवाद जापानी भाषा में हुआ है। रंगून के मारवाड़ी पुस्तकालय में हिंदी की पुस्तकें है। श्रीलंका में हिंदी प्रचार संस्था हिंदी प्रचार का कार्य करती है। बाज़ारवाद के कारण आज हिंदी में कम्प्यूटीकरण होना उसके विकास का परिचय है, जो अन्य देशों से जोडकर मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

नेपाल में हिंदी बोली,पढ़ी और समझी जाती है। एम.ए. तक की पढ़ाई यहाँ की विश्वविद्यालयों में हिंदी में होती है। नेपाली कवि हिंदी में लेखन करते है। पाकिस्तान और बांगलादेश में हिंदी अधिक संख्या में बोली और समझी जाती है। म्यॉमार में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित है।

अमेरिका के सेंट्रल इंटेलीजेंस एजेन्सी २००५ की सी.आई.ए. वर्ल्ड फैक्ट बुक के अनुसार धरती पर बोली जानेवाली भाषाओं में से विश्व की सबसे प्रभावशाली चतुर्थ भाषा हिंदी है। आज विश्व में हिंदी के प्रचार–प्रसार और लोकप्रियता का विश्लेषण परिणाम हिंदी को एक ऊर्जापूर्ण भविष्य की ओर ले जा रहा है। हिंदी के विस्तार में विश्व स्तर पर हिंदी साहित्य की भूमिका उल्लेखनीय है। कम्प्यूटर की विभिन्न विधाओं में हिंदी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने में बढ़ रही है। इससे इंटरनेट की दुनिया में हिंदी के फैलते साम्राज्य की नई जानकारियाँ मिलती रहती है। अभिव्यक्ति, गर्भनाल आदि वेब पत्रिकाएँ हिंदी गद्य विधा में उपलब्ध है। जालघर पर अनेक हिंदी पत्रिकाएँ और ब्लॉग हिंदी के महत्व को दर्शाते हुए प्रचार–प्रसार में व्यस्त है।

प्रसिद्ध सर्च इंजन गूगल के प्रमुख एरिक श्मिट कहते है कि 'अगले पाँच से दस सालों में हिंदी इंटरनेट पर छा जाएगी और अंग्रेजी और चीनी के साथ हिंदी इंटरनेट की दुनिया की प्रमुख भाषा होगी। हिंदी के फॉन्ट में एकरूपता के अथक प्रयासों में युनिकोड की उपलब्धि ने हिंदी फॉन्ट को एकरूपता देने का प्रयास किया है।

आज इंटरनेट के जगत में याहू जैसी नेट प्रदान करनेवाली कंपनी देवनागरी लिपि की ओर दूर्लक्षित कर रही है। हिंदी लेखन रोमन लिपि में हो रहा है। पर गूगल द्वारा इसके लिए सराहनीय प्रयास हो रहें हैं। इसतरह वैश्वीकरण की दौर में आज हिंदी आस्था– विश्वास, साहित्य, कला, वाणिज्य, दर्शन, व्याकरण, नृत्य–संगीत को सुरक्षित रखते हुए देश–विदेश में व्यापार, शिक्षा और व्यवहार का संगम के रूप में एक सेतु बन गई है। आज भारत के बाहर विश्व के करीब सौ विश्वविद्यालयों में हिंदी पर शोध कार्य किया जा रहा है। विश्व की एक समर्थ और समृद्ध भाषा के रूप में आज हिंदी के कदम बढ़ रहें हैं। इसलिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में हिंदी को उचित स्थान मिलने के लिए हमारे प्रयास होने चाहिए। इस कार्य के लिए भारत सरकार को आर्थिक व्यय करना होगा। इसीलिए दिल्ली में विश्व हिंदी विश्वविद्यालय के एक केंद्र की स्थापना की योजना शिक्षा मंत्रालय में प्रस्तुत की गई है। इसके अनुसार इस केंद्र में हिंदी के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त एवं विश्व की अन्य प्रमुख भाषाओं के लिए दुभाषिए और अनुवादक तैयार करना, इन कार्यों के लिए कम्प्यूटरों जैसे आधुनिक वैज्ञानिक यंत्रों और साधनों का प्रयोग करना आवश्यक है। हिंदी के संदर्भ पुस्तकालय की स्थापना, त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन कर हम भाषा और साहित्य के क्षेत्र में संसार की अन्य भाषाओं और हिंदी में होनेवाले महत्वपूर्ण कार्यों का परिचय पाठकों तक पहुँचा सकते हैं। विश्व हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना से यह कार्य संभव हो सकता है। विदेश को जोड़ने का यह महत्वपूर्ण माध्यम रहेगा।

अपनी कई कठिनाइयों के बावजूद हिंदी प्रौद्योगिकी जगत में अपने पैर जमायें हैं। जालघर के कुछ प्रमुख हिंदी पत्रिकाओं ने युनिकोड को अपना लिया है। कई बैंक और कार्यालयों और हिंदी के विभिन्न सॉफ्टवेयर कंपनियों को चाहिए कि इस दिशा में कुछ कारगर कदम उठाने चाहिए। व्यवसाय के क्षेत्र में यह सर्व ज्ञात है कि शीत पेय की बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हिंदी को ही गले लगाया है। मनोरंजन हेतु सास–बहु के झगड़े को भी पेप्सी, कोको कोला के हिंदी विज्ञापन ने व्यवसाय के महासमर पर भी मात कर दिया है। हिंदी अब केवल जनसामान्य की भाषा नहीं रह गई है। वह प्रथमत: भाव की सुंदर भाषा है ही, साथ ही विचार की, ज्ञान की भी भाषा है।

आज कई बातों में हिंदी भारत की संपर्क भाषा के रूप में प्रयोग बढ़ा है। इसमें संदेह नहीं कि आजादी की तुलना में आज कई दृष्टियों से स्थितियाँ बदल गई है। आज राष्ट्रीयता की जैसी ज्वलंत भावना नहीं है। समय के प्रवाह में सभी मूल्यों में परिवर्तन और मूल्यविघटन हो रहा है। अत: राष्ट्रीयता की भावना के अभाव में हम कई समस्याओं का समाधान करने में असफल है। भारत सरकार की राजकाज में हिंदी तो पनप रही है,पर आज भी हमारे देश में अँग्रेजी विद्यालय खुल रहें है। यह ठिक है कि अँग्रेजी से हम ज्ञान–विज्ञान प्राप्त करें न कि इसलिए हम अपनी भाषा, संस्कृति और परंपरा की उपेक्षा करें। हिंदी न तो विदेशी भाषा है न देवभाषा; वह तो हमारे देश की संपर्क भाषा और राजभाषा है। अत: अपनी भाषा का सम्मान हमें ही करना है। हिंदी लोकतंत्र के उन बुनियादी मूल्यों से जुड़ी है, जिससे लोकतंत्र में प्राण संचार हो सकते हैं।

वर्तमान परिवेश में हमारी दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव में हिंदी की स्थिति कुछ विचित्र नज़र आ रही है। कुछ लोग हिंदी के वर्तमान गति, प्रगति और नीति की सराहना करतें हैं तो दूसरी ओर कुछ लोग अशुद्ध, अनर्गल और अभद्र जैसे विशेषणों से नवाज़ने में नहीं हिचक रहें है। इसप्रकार आज हिंदी चर्चा–परिचर्चा के अनेकों दौर से गुज़र रही है। हमें पता है कि आज इंग्लिश के अत्यधिक प्रभाव के कारण उसका मूल रूप बिगड़ता जा रहा है। जब वैश्विक स्तर पर हिंदी अपनी प्रगति दर्शायी जा रही है, पर उसका मौलिक रूप बचाये रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। संसार की छह भाषाएँ– अँग्रेजी, फ्रेंच, स्पॅनिश, चीनी, जर्मन और अरबी आदि संयुक्त राष्ट्रसंघ की अधिकारिक भाषाएँ हैं; फिर हिंदी में कौनसी कमियाँ है? इस बात पर हमें गंभीरता से सोचना चाहिए और इस दिशा में उचित कार्यवाही होने की आवश्यकता है। इस भूमंडलीकरण की दौर में फिर भी हिंदी कई परिशानियों से गुज़रती हुई जनमानस के हृदय में वंदनीय भाषा बनती जा रही है।

यह सत्य है कि जब तक मानव समाज है तब तक भाषा का अस्तित्व है। कोई भी भाषा तभी समृद्ध और विकसित हो सकती है जब उसमें श्रवण, लेखन और बोलना आवश्यक होता है। आज हम अपने देश में अधिक संख्या में हिंदी में लेखन और बोलने के बजाए अधिक सख्या मे हिंदी सुनते हैं और समझते हैं। यदि हम सभी भारतवासी हिंदी में लेखन और बोलने का प्रयास करेंगे तो अँग्रेजी की अपेक्षा हिंदी का शब्दभंडार बढ़ेगा, हमारी वैज्ञानिक लिपि देवनागरी रहेगी। और हिंदी भाषा की जो नजाकत और गरिमा है वह सदैव बनी रहेगी। इसतरह हमारी हिंदी राष्ट्रभाषा होने की क्षमता रखती है। हिंदी अपने पूरे देश की जब राष्ट्रभाषा होगी तब उसे विश्वभाषा के रूप में विराजमान होने में देर नहीं लगेगी। अत: वर्तमान में हिंदी चाहे जनसंचार माध्यमों की भाषा हो, चाहे रोजगाार क्षेत्र की भाषा हो, चाहे विज्ञापन की भाषा हो, उसका प्रभाव न कभी कम होगा। वह तो पहले मानवता की भाषा है, जिस छोर से इसे देखो उसकी कोई सीमा नहीं होगी, उसका आकाश भूमंडलीय और बहुआयामी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची.

१. हिंदी उद्भव विकास और रूप – डॉ॰ हरदेव बाहरी
२. जनसंचार और विविध माध्यम– डॉ. शम्भूनाथ द्विवेदी
३. हिंदी में रोजगार के अवसर– प्रा. विकास पाटील
४. भाषाविज्ञान और हिंदी भाषा के बढ़ते कदम– डॉ. शुभंवदा पाण्डेय
५. व्यावसायिक क्षेत्रों में हिंदी प्रयोग– डॉ.एस.पी.शर्मा
६. www.google.com